International Journal of Applied Research 2017; 3(1): 811-814

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(1): 811-814
www.allresearchjournal.com
Received: 19-11-2016
Accepted: 20-12-2016

नीलम कुमारी
शोधार्थी, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग, रोहतक, हरियाणा, भारत।

Correspondence
नीलम कुमारी
शोधार्थी, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग, रोहतक, हरियाणा, भारत।

संवेदना और सौन्दर्य

नीलम कुमारी

शोध सारांशः मानव स्वभाव से ही संवेदनशील प्राणी है। दुःख और सुख की अनूभूति ही संवेदना है। सभी प्राणियों में किसी न किसी रूप में संवेदना विद्यमान होती है। संवेदनाओं की विभिन्न परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि संवेदना विभिन्न ज्ञानेन्द्रियों से आविर्भूत होती है। यह बाह्य और आंतरिक दो प्रकार की होती है। सौन्दर्य शब्द सृष्टि के कण–कण में विद्यमान है। सौन्दर्य अंग्रेजी के 'ब्यूटी' का पर्याय है। सौन्दर्य काल, स्थिति व परिवेश के अनुसार बदलता रहता है। सौन्दर्य को सत्य, शिव व सुन्दर माना गया है। मूक, बधिर मानव व प्राणी भी संवेदना और सौन्दर्य को महससू कर लेते है। सौन्दर्य दो प्रकार का होता है। बाह्य में उसका रंग–रूप, श्रृंगार चेष्टाएं आती है जबकि आंतरिक में उसका शील स्वभाव, कर्म, उदारता, नम्रता आदि का वर्णन होता है।

मुख्य शब्दः संवेदित, तंत्रिका–तंत्र, विलक्षण, ज्ञानेन्द्रियों, आविर्भूत, व्याख्यात, सुष्ठु, घुटुरूनि, वस्तुगत।

प्रस्तावना

मानव स्वभाव से ही संवेदनशील और भावुक है। मनुष्य की शारीरिक संरचना का निर्माण कुछ ऐसे ही तत्वों से हुआ है कि सुखात्मक, दुखात्मक विषयों के प्रति उसका नाड़ी संस्थान अत्यधिक संवेदित रहा करता है। संवेदना हमारी इन्द्रियों द्वारा भेजी गई क्रिया के प्रत्युतर प्रतिक्रिया है। जब हम अत्यधिक उत्तेजित या हर्षयुक्त होते है तो हमारा मस्तिष्क पूरे तंत्रिका तंत्र को अपना संदेश भेजता है और मस्तिष्क अपना उत्तर संवेदना के रूप में व्यक्त करता है।

संवेदना और काव्य का गहरा संबंध है। मन में होने वाला बोध या अनुभव संवेदना है। संसार के विभिन्न पदार्थ अपने अनेक गुणों रंग–रूप, अवस्था, आकार–प्रकार के कारण जब हमारी इन्द्रियों के सम्पर्क में आते है तो हमारे नाड़ी संस्थान में विलक्षण प्रकार का प्रभाव छोउ़ देती है। ये विशेष प्रकार के भाव या प्रभाव हमारे मन मस्तिष्क पर अपना स्थायित्व कर लेते है। ये भाव उस वस्तु, व्यक्ति विशेष का नाम लेने से ही या उसकी कल्पना मात्र से ही हमारा नाड़ी संस्थान प्रभावित होने लगता है। उसके स्पर्श मात्र से ही अनुभूति होने लगती है। मानव के सुखात्मक और दुखात्मक भाव ही संवेदना या अनुभूति कहलाती है। संवेदना को प्रकट करने के लिए किसी न किसी माध्यम की आवश्यकता होती है।

कोई कवि या साहित्यकार कविता रचना तो जब चाहे लिखे परन्तु उसके भीतर संवेदना परिपक्व या अपरिपक्व रूप में पहले से ही विद्यमान होती है। संवेदना वैसे तो साधारण पहले से भी उत्पन्न होती है, परन्तु रचनाकार, दार्शनिक व कलाकार में इसकी अधिकता विशेष रूप में पाई जाती है। जब शिशु पैदा होता है तो उसमें भी संवेदना होती है– उसमें कष्ट, पीड़ा तथा उत्तेजना रूपी संवेदना होती है।

मूलतः संवेदना का अर्थ :– ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त अनुभव अथवा ज्ञान संवेदना है, परन्तु वर्तमान युग में इस शब्द का प्रयोग सहानुभूति के अर्थ में होने लगा। मनोविज्ञान में आज भी इसका प्रयोग अपने मूल अर्थ में ही किया जाता है। 'सम्' उपसर्ग के प्रयोग में 'वेदना' शब्द में अर्थ विशिष्ट उत्पन्न होकर संवेदना का अर्थ सहानुभूति हो जाता है पर हिन्दी में प्रायः सहानुभूति, सह + अनुभूति के पयार्यवाची के रूप में प्रचलित है।

'सम्' उपसर्ग में 'वेदना' शब्द जुड़ जाने से संवेदना शब्द बना है। 'सम्' एक उपसर्ग है जिसका अर्थ है– सम्यक् अर्थात् भली भांति। 'वेदना' शब्द 'विद्' धातु से बना है। जिसमें 'युच' प्रत्यय जोड़ने पर 'युच' के स्थान से 'अन्' आदेश हो गया। फिर 'ई' को गुण करने से 'वेदन' शब्द निष्पन्न हो गया। इसके बाद स्त्रीलिंग में 'टाप' प्रत्यय जोड़ने 'से 'वेदना' शब्द की निर्मित हुई। 'वेदना' शब्द का सामान्य अर्थ है– दुःख, कष्ट या पीड़ा।

संवेदना से तात्पर्य :– मानव की ज्ञानेन्द्रियों को प्रत्यक्ष अनुभव होना अर्थात् जो ज्ञान या अनुभव हमें साक्षात् रूप में मिले, उसे संवेदना कहा जाता है। संवेदना के लिए अंग्रेजी में 'सेन्सेशन' 'सिम्पैथी', 'सेन्सिटिविटी', 'इमोटिविटी' और 'फैलो–फीलिंग' आदि शब्द प्रयुक्त होते है।

हिंदी के विभिन्न कोशों में संवेदना के अलग–अलग अर्थ दिये गए है। 'मानक हिंदी कोश' में इसके निम्न अर्थ दिये गए है।

1. मन होने वाला अनुभव या बोध।
2. किसी को कष्ट या पीड़ा में देखकर मन में होने वाला दुःख। किसी प्रकार की वेदना देखकर स्वयं भी बहुत कुछ उसी प्रकार की वेदना अनुभव करना।
3. उक्त प्रकार का दुःख या सहानुभूति प्रकट करने की क्रिया भाव।

''संवेदना शब्द का मुख्य अर्थ है– अनुभूत या ज्ञात, वस्तुतः दुःख–सुख, गर्मी, सदी, आदि का अनुभव या ज्ञान होना ही संवेदना है, परन्तु हिन्दी में यह प्रायः सहानुभूति के पर्याय के रूप में ही प्रचलित है।''

मनोविज्ञान के क्षेत्र में संवेदना शब्द पर भिन्न–भिन्न दृष्टिकोण और परिभाषाएं दी गई है। प्रत्येक व्यक्ति जब किसी कर्म में अनुलग्न होता है तो उसके जीवन में कोई न कोई घटना घटित होती है। उस घटना विशेष से उसका मन संवेदित हो उठता है। यह 'मन' शब्द मनोविज्ञान से जुड़ा है जिसे 'पम्पोनॉजी' ने 'मन का विज्ञान' की संज्ञा दी है। इसलिए हमें मनोविज्ञान विषय से भी संवेदना शब्द की पुष्टि कर लेनी चाहिए। – ''संवेदना ऐसी सरलतम मानसिक प्रक्रिया है जो विभिन्न ज्ञानेन्द्रियों से आविभूर्त होती है। ये संवेदनाएं शारीरिक और मानसिक दोनों हैं– संवेदना ज्ञानात्मक संबंध का सर्वप्रथम और सरलतम रूप है।''

हिंदी विश्वकोष के अनुसार– ''तंत्रिका तंत्र द्वारा बाह्य उत्तेजना, पीड़ा आदि अनुभव करने के गुण को ही संज्ञा या संवेदना कहते है।''

इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि संवेदना एक मानसिक प्रक्रिया है जो बाह्य जगत के प्रभाव से हमारी ज्ञानेन्द्रियों को प्रभावित करती है। मानक हिंदी शब्दकोश में संवेदना के अनुभव, सहानुभूति तथा इनको प्रकट करने वाली क्रियाओं और भावों से संबंधित बताया गया है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि सभी संवेदनाएं अनुभूति जन्य होती है। संवेदना साहित्यक का चिरंतन विधायक तत्त्व होता है। संवेदना शब्द साहित्य के अलावा मनोविज्ञान में भी प्रयुक्त होता आया है। विषय के प्रति साहित्यिक दृष्टिकोण तथा मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण में भी अंतर होता है।

प्रत्येक व्यक्ति की अलग–अलग परिस्थितियां होती है। मानव का बाहरी आकार–प्रकार एक जैसा होते हुए भी उसकी मानसिक गतिशीलता के अपने ही मान होते है, जो उसकी संवेदना शक्ति पर आधारित होते हैं। साहित्य शास्त्र में संवेदना शब्द को विशिष्ट अर्थ के सूचक के रूप में गृहीत किया जाता है। मनोविज्ञान शास्त्र में संवेदना का अर्थ इस शब्द के साहित्यिक प्रचलित अर्थ से भिन्न है। साहित्य में संवेदना शब्द का प्रयोग हमारी संवेगात्मक इन्द्रियों तथा मनःस्थितियों के लिए होता है जैसे प्रसन्नता, अवसाद, शोक, घृणा, राग–विराग अथवा सहानुभूति। मनोविज्ञान में इसका अर्थ बाहरी उत्तेजना या पीड़ा है जिसे हमारी पांचों ज्ञानेन्द्रियों ग्रहण करती है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार – ''संवेदना का अर्थ सुख दुखात्मक अनुभूति ही है लेकिन दुखात्मक अनुभूति से इसका गहरा संबंध हैं संवेदना शब्द अपने वास्तविक या अवास्तविक दुःख पर कष्ट अनुभव के अर्थ में आया है। मतलब यह कि अपनी किसी स्थिति को लेकर दुःख का अनुभव करना ही संवेदना है।''

संवेदना एक मानवीय विषमता है जिसे भिन्न भिन्न रूपों में जाना जा सकता है। संवेदना भिन्न काल, भिन्न वातावरण तथा भिन्न परिस्थितियों में अलग–अलग रूप में प्रस्तुत होती है। किसी व्यक्ति के मन या चित्त पर कोई अलग प्रभाव पड़ता है तो मानव की संवेदना भी भिन्न हो जाती है। हर प्रकार की साहित्यिक रचना के लिए संवेदना का महत्त्व है। संवेदना कवि कलाकार व साहित्यकार के साथ–साथ मूक प्राणियों में भी होती है। पशु भी मूक भाषा में अपनी संवेदना या वात्सल्य भाव प्रकट करते है। जंगल में शेर या चीता बैठा हो तो वह अपने सामने से शिकार को कभी नही जाने देता क्योंकि वह शिकार उसकी क्षुधा की तृप्ति का साधन होता है।

भारतीय काव्य जगत् में संवेदना को उच्च स्थान मिला है। मानव के शरीर में अनेक प्रकार के ज्ञान के तन्तु फैले होते है। जब कभी भी हमारे शरीर का कोई भाग किसी देखी हुई घटना या बाहरी वातावरण के सम्पर्क में आता है तो वह घटना हमारे प्रत्यक्ष खड़ी होकर मानव को संवेदित कर देती है। कवि या कलाकार हृदय की गहराई में जाकर बुद्धि का सहारा लेकर संवेदना की सीमा तक पहुंच जाता है

जिन वस्तुओं पदार्थो को हम अपने पास से देखते हैं, उन्हें स्पर्श करके चले जाते हैं। जब कभी दोबारा हमारा उनसे सामना होता है तो उन वस्तुओं, व्यक्तियों की स्मृति हमारे मानस पटल पर उभरने लगती है जैसे विवाह या उत्सव में हमारे सफेद वस्त्रों पर किसी ने कॉफी गिरा दी तो अगली बार वह व्यक्ति दिखाई देते ही हमें झट से कॉफी याद आने लगती है। इसके बाद हमारी स्मृति संवेदना में बदलने लगती है।

कुछ विद्धानों के अनुसार संवेदना आदर्शो से स्वतंत्र होती है, प्रायः शुद्ध अनुभूति के अर्थ में उसे प्रयुक्त किया जाता है। अगर सच्चाई यह है कि एक रचनाकार की अनुभूति में कोई अंतर ही न रह जाए। प्रायः हर संवेदित व्यक्ति के पीछे एक मूल्य दृष्टि होती है। मानव की संवेदना दृष्टि वास्तविक और कुछ पहलूओं के प्रति आकर्षित होकर मर्मस्पर्शी बन जाती है। जीवन के कुछ एक पहलू ही उसे जागृत कर देते है क्योंकि रचनाशील एक विशेष दिशा में होती है।

संवेदना के प्रकार :–

संवेदना के दो प्रकार है– बाह्य संवेदना और आंतरिक संवेदना। संवेदना को भली भांति व्याख्यात करने के बाद यह सिद्ध होता है कि संवेदना वह अनुभूति है जिसमें व्यक्ति की ज्ञानेन्द्रियां बाहरी वातावरण से प्रेरित होती है। आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा। ये पांच प्रमुख ज्ञानेन्द्रिया वातावरण में होने वाले परिवर्तनों को ग्राह्य करने वाले अंगों को ज्ञानेन्द्रियां कहा जाता है। ये ज्ञानेन्द्रियां अनुभूति को एकाग्र करके किसी भी रचनाकार के मन को उद्वेलित कर देती है। मानव द्वारा प्रत्यक्ष देखी व अनुभव की गई वस्तु, पदार्थ या घटना का प्रभाव मानव मन पड़ता है। जब हम किसी रंगशाला और नाट्यशाला में किसी नाटक का मंचन का दृश्यांकन कर रहे है। उस समय युद्ध का दृश्य आने पर या किसी घटना का दृश्य देखने पर जैसे महाभारत में चीर हरण की घटना देखकर हम धर्म–अधर्म, न्याय–अन्याय की बाते करने लग जाते है। कभी कभी हम रंगमंच पर प्रेम या करूणा का दृश्य को देखते है तो हमारे हृदय में भी वही भाव जागृत हो जाता है।

घ्राण इन्द्रिया भी मानव की ज्ञानेन्द्रियों में शामिल है जिसका काम सूंघकर संवेदित होना होता है। विभिन्न प्रकार के पुष्पों की उद्यान से खुशबू हमें पुलकित कर देती है। त्वचा मानवीय शरीर को भी सौन्दर्य प्रदान करती है। इस त्वचा रूपी सौन्दर्य ने तो बड़े ऋषि मुनियों के व्रत को भंग कर दिया था। इसी प्रकार एक छोटा सा कांटा चुभकर त्वचा को आन्दोलित कर देता हैं रसास्वादन की अनुभूति का संबंध मानव की जिह्वा से होता है। यह विभिन्न तंत्रिकाओं से जुड़ी एक स्वाद तंत्रिका है।

आंतरिक संवेदना :–

आंतरिक संवेदना बाह्य संवेदना से बिल्कुल भिन्न होती है। बाहय संवेदना का अपना ही क्षेत्र होता है। जब हम किसी की कोई बात सुन लेते है तो हम मूक होकर खड़े हो जाते हे। जबकि

सुनना और खड़ा होना अलग–अलग संवेदनाएं है। स्वादिष्ट भोजन खाकर हमें आत्म संतुष्टि होती हैं यह आंतरिक संवेदना है। घर में कोई उत्सव विवाह आने पर हम आंतरिक रूप से रोमांचित हो उठते है।

सौन्दर्य :–

सौंदर्य शब्द व्यापक अर्थ में प्रयुक्त होता है। यह सृष्टि के कण–कण में व्याप्त है। 'सुंदर' शब्द एक विशेषण है लेकिन सौन्दर्य शब्द 'सुंदर' की भाववाचक संज्ञा से बना है। सुंदर विशेषण में 'ष्यन्' प्रत्यय लगकर सौन्दर्य शब्द निष्पन्न होता है। अतः सौन्दर्य शब्द के लिए 'सुंदर' शब्द की व्युत्पति की जरूरत है। कभी–कभी सौन्दर्य विषय हेतु अनुमान का सहारा लेना पड़ता है।

सौन्दर्य शब्द का निर्माण 'सु' उपसर्ग 'उन्द्' धातु में 'अरन्' प्रत्यय जोड़कर बना है। 'सु' का अर्थ 'सुष्ठ' या भली भांति तथा 'उन्द' का अर्थ 'आर्द्र करना' और 'अरन्' कृर्त वाचक प्रत्यय है। अतः इसका अर्थ हुआ– भली भांति आर्द्र करने वाला।

'सुंदर' शब्द के अनेक पर्याय है– प्रिय, मनोज्ञ, मनोहर, आकर्षक, लावण्य, रूचिर, चारू, मनोरम, शोभन्, साधु, सुषम, कान्त, रूच्य, मंजुल, सौम्य, रमणीय, अभिराम, चकित, सुमन, दिव्य आदि।

अंग्रेजी में सौन्दर्य का पर्यायवाची शब्द है – 'ब्यूटी' संस्कृत अंग्रेजी हिन्दी में 'सुंदर' शब्द के अनेक पर्याय है पर वास्तविक रूप से 'सौन्दर्य' शब्द ही है जो अपने अंदर एक आकर्षक भाव छिपाये रहता है। सौन्दर्य की कोई सर्वप्रचलित परिभाषा नहीं है। अलग–अलग देश, स्थान, काल में सौन्दर्य की परिभाषा भिन्न भिन्न हो सकती है क्योंकि अलग–अलग व्यक्ति के अनुसार कोई वस्तु सुंदर हो सकती है। दूसरी जाति या काल के अनुसार कोई वस्तु 'सुंदर' भी हो सकती है। दूसरी काल व जाति के अनुसार वह असुंदर भी हो सकती हैं कोई वस्तु किसी समय में अनुकरणीय व ग्राह्य हो सकती है। दूसरे ही समय में वह त्याज्य भी हो सकती है।

वाचस्पति गैरोला के अनुसार – ''सौन्दर्य बोध का जो दृष्टिकोण पश्चिम के विचारकों का रहा है, यदि हम उसकी तुलना भारतीय विचारकों से करते हैं तो हमे लगता है कि पश्चिम की अपेक्षा भारत की सौन्दर्य जिज्ञासा अधिक व्यापक एवं अनुभूति पूर्ण है।''

भारतीय विद्वानों ने कलात्मक ढंग से सौन्दर्य का वर्णन किया है। सौन्दर्य का क्षेत्र व्यापक माना गया है। सौन्दर्य एक ऐसी अनुभूति है जो सुखद व सहज होती है। यह वस्तुओं, रंगों, रेखाओं के प्रति अनायास ही उत्पन्न हो जाती है। सौन्दर्य चाहे नैसर्गिक हो, सामाजिक हो, आध्यात्मिक हो या मानसिक हो, हर किसी को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। सौन्दर्य बाहरी वस्तु न मानकर आंतरिक वस्तु मानी गई है।

प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक प्लेटो ने सौन्दर्य को सत्य, शिव और सुन्दर माना है। उन्होंने कहा है कि सौन्दर्य वही है जो मानव को उसकी प्रंशसा करने के लिए मजबूर कर देती है। क्रोचे ने मानव की सफल अभिव्यक्ति को ही सौन्दर्य माना है। हीगेल ने पदार्थ में आत्म प्रकाशन को सौन्दर्य की श्रेणी में रखा है जबकि फ्रॉयड ने कामवासना को सौन्दर्य की संज्ञा दी है।

सौन्दर्य का दर्शन आंखों से होता है। सौन्दर्य की अनुभूमि निष्काम व निश्छल होती है। सौन्दर्य संजीव वस्तु में ही नहीं बल्कि अचल, जड़, अचेतन भी हो सकता है।

हेलेन केलर जेा अमेरिकी लेखक व आचार्य थी, वह बधिर और दृष्टिहीन थी, उन्होंने अपनी आत्मकथा ''स्टोरी ऑफ माई लाइफ' में लिखा कि वह प्रकृति के सौन्दर्य को बिन आंखों से देख लेती है जबकि मानव आंखों के होते हुए भी उन्हें नहीं देख सकता। वह बहते हुए पानी में संगीत की ध्वनि व चहचाहते हुए पक्षियों की आवाज में भी संगीत का सौन्दर्य महसूस कर लेती थीं इसी प्रकार वह चीड़ की व भोजपत्र की छाल को स्पर्श करे प्राकृतिक सौन्दर्य की अनुभूति कर लेती थी। गुलाब व कमल के फूलों की पंखुड़ियाँ को अपने हाथों से स्पर्श करके उनकी गोलाई व मखमली सतह को पहचान कर प्रकृति के सौन्दर्य तक पहुंच जाती थी।

भारतीय आत्मवादियों ने कहा कि सौन्दर्य प्रत्येक व्यक्ति के मन होता है। उन्होनें इसे आध्यात्मक से जोड़ा है। एक वस्तु एक ही समय में किसी व्यक्ति को सुंदर तथा दूसरे को वह कुरूप भी लगती है। भक्तिकालीन संतों में सौन्दर्य को अलौकिक ईश्वर से जोड़कर देखा है। सगुण धारा वाले संतों ने ईश्वर के साक्षत् अवतार के सम्पूर्ण सौन्दर्य ही दिखाई पड़ता है। प्रत्येक वस्तु की कुछ न कुछ विशिष्ट संरचना होती है जिसके कारण वह सुंदर लगती है। मानव को सुखद करने वाली अनुभूतियां सौन्दर्य का कारण बनती है।

सौन्दर्य मानव जीवन को ऊर्जा व ओज से मंडित कर देता हैं। मानव के सम्पूर्ण जीवन में नई झंकार पैदा कर देता है। मानव के सम्पूर्ण जीवन में नई झंकार पैदा कर देता है। यह साहित्य व संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग होकर विकास की ओर संकेत करता हे। जड़ में सौन्दर्य का प्रभाव भी मानव को चेतन अवस्था में ला देता है। कला और साहित्य की पृष्ठभूमि में सौन्दर्य एक अनिवार्य तत्व के रूप में विद्यमान रहता है किन्तु रूचि, भिन्नता व देशकला के अनुसार सौन्दर्य के विभिन्न रूप देखने को मिलते है।

सौन्दर्य के प्रकार :–

1. मानवीय सौदर्य
2. प्राकृतिक सौंदर्य
3. वस्तुगत सौंदर्य
4. कलागत सौंदर्य

मानवीय सौन्दर्य :– मानव संसार का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। काव्य का मुख्य प्रेरक तत्त्व मानवीय सौन्दर्य ही रहा है। मानव सौन्दर्य ने हमेशा से कवि, कलाकारों व साहित्यकारों को अपनी ओर आकर्षित किया है। कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से मानव के नख–शिख का वर्णन करके उसके सौन्दर्य को चरमोत्कर्ष तक पहुंचाया है। कवियों ने स्त्री–पुरूष शारीरिक ही नहीं बल्कि गुणात्मक सौन्दर्य का कभी वर्णन किया है। सांसारिक मानव शिशु अवस्था से युवावस्था, युवा से वृद्धावस्था की ओर अग्रसर होता है, परन्तु कवि व कलाकार का सौन्दर्य किसी उम्र व अवस्था पर आधारित न होकर उसकी रूचि, प्रवृति व संस्कृति पर आधारित होता है। मानव सोन्दर्य को तीन भागों में बाँटा गया है। शैशवावस्था, युवावस्था तथा वृद्धावस्था।

शैशवावस्था :– बालक की जन्म से लेकर 6 वर्ष तक शैशव अवस्था मानी जाती है। बालक, बालिकाएं सभी आते है। इस अवस्था का सौन्दर्य अत्यंत अद्भुत होता है। इस अवस्था के सौन्दर्य का वर्णन हमारे हिन्दी साहित्य में बहुत मिलता है। बालक अपनी सहज सौन्दर्य रूपी क्रियाओं से सबको मोहित कर लेता है। पत्थर, हृदय भी पिघल जाते हे। हिन्दी साहित्य में तो शैशव सौन्दर्य का बड़ा ही मनोहारी चित्रण किया गया है। बच्चे की मधुर मुस्कान, उनका भोलापन, सहजता, तुतलाना, छोटे छोटे कदमों से चलना, सुकुमारता, उनका रोना, रूठना, आदि चेष्टाएं मानव को अपनी ओट आकृष्ट कर ही लेती है। सुर ने कृष्ण के बालरूप का वर्णन करते हुए लिखा है –

''सोभित कर नवनीत लिए घुटुरूनि चलत
रेनु तन मंडित मुख दधि लेप किए।''

युवावस्था :–शैशवावस्था के बाद युवावस्था आती है। इस अवस्था का अपना ही एक अद्भुत सौन्दर्य होता है। इस अवस्था में शारीरिक व मानसिक सौन्दर्य उच्च सीमा पर होता हे। यह अवस्था मानव सौन्दर्य की पूर्णता की अंतिम सीमा है। प्रसाद जी

का कहना है – ''कठोरता का उदाहरण है पुरूष और कोमलता का विश्लेषण है स्त्री जाति। पुरूष क्रूरता है तो स्त्री करूणा है।'' नारी सौन्दर्य को साहित्य में व्यापक रूप में वर्णित किया गया है, नर सौन्दर्य की अपेक्षा। सौन्दर्य की साकार प्रतिमा नारी को ही माना गया है। नारी सौन्दर्य से हमारा इतिहास भरा पड़ा है। जैसे पद्मिनी सौन्दर्य, राधा सीता, द्रौपदी, सावित्री, दमयन्ती, आदि। इतिहास साक्षी हे कि नारियों का सौन्दर्य ही कई युद्धों का कारण भी बना है। नारी के सौन्दर्य को दो भागों में बांटा गया है। बाह्य सोन्दर्य तथा आंतरिक सौन्दर्य। बाह्य सौन्दर्य के अन्तर्गत नारी की वेश भूषा, उसकी चेष्टाएं, श्रृंगार तथा उसका रूप सौन्दर्य आता है। आंतरिक सौन्दर्य के अंतर्गत नारी का शील स्वभाव, कर्म सौन्दर्य, सेवा भावना, त्याग करूणा लज्जा नम्रता, उदारता तथा मधुर वाणी आदि आते है।

बाहरी सौन्दर्य में अनेक प्रसाधन आते है। जैसे उबटन, स्नान, मंजन, माँग भरना, मेहंदी या महावार, काजल, बिंदी, मालाएं आदि। अनेक प्रकार के आभूषण, कंगन, कर्णफूल, पायल, हार आदि का वर्णन मिलता है। भारतीय इतिहास में तो 16 श्रृंगार का वर्णन दर्शाया गया है। ये सभी बाह्य सौन्दर्य के प्रतीक है। अनेक कवियों ने नारी के आंतरिक सौन्दग्र की पअेक्षा बाहरी सोन्दग्र को ज्यादा महत्व दिया हे। पुरूष सौन्दर्य का चित्रण हमारी कथा कहानियों में ज्यादा नहीं मिलता है। पुरूष सौन्दर्य में उसके पौरूष उसकी वीरता, धैर्य शील व्यवहार आदि का वीरता दर्शाया गया है। नारी की रति से, तो पुरूष के सौन्दर्य की तुलना कामदेव से की जाती रही है।

वृद्धावस्था :– युवावस्था के बाद प्रौढ़ावस्था से होती हुई वृद्धावस्था तक पहुंच जाती हे। इस अवस्था में वृद्धि न होकर विकास होता है। इस अवस्था में आकर कुछ व्यक्तियों में तेजस्वी होने का गुण आ जाता है। इस कारण अन्य व्यक्ति उनका श्रद्धानत होकर सम्मान करने लग जाते है। ऐसे व्यक्ति समय समय पर हम सबका मार्गदर्शन करते हे। ये व्यक्ति समाज के लिए महत्वपूर्ण बन जाते है। इन व्यक्त्यिों में कल्पना शक्ति, निपुणता और अनुभाव शक्ति अधिक समाहित होती है।

वस्तुगत सौन्दर्य :– मानव ने जो वस्तुंए बनाई है, उन वस्तुओं मे पाया जाने वाला सौन्दर्य वस्तुगत सौन्दर्य कहलाता है। यह सौन्दर्य दो प्रकार का होता है मानव कृत कलाकृतियो का सौन्दर्य तथा मानव द्वारा बनाई गई उपयोगी वस्तुओं का सौन्दर्य इसमें मन्दिर, मस्जिद, दुर्ग, महल, वस्त्र आभूषण, मेज कुसी, पलंग, किताब बर्तन आदि उपयोगी वस्तुओं की अपेक्षा कलाकृतियों का सौन्दर्य मानव को अधिक आकर्षित करता है। उपयोगी वस्तुओं का सौन्दर्य भी लुभावना हो सकता है। जब वे उच्च कोटि की कलाकृति में समाहित हो जाती है और हमारे मन मस्तिष्क में बस जाती है। ये दोनों प्रकार का सौन्दर्य अपनी अपनी जगह विशेष महत्व रखती है। सौन्दर्य प्रकृति में है। मानव के मन में भी उसकी अनुभूति होती है। यह अनुभूति व्यक्तिगत भी है और समाजगत भी है। व्यक्ति समाज का अंग हैं सौन्दर्य की वस्तुगत सता हैं यह सता प्रकृति में है। मानव जीवन और मनुष्य की चेतना में है। सौन्दर्यबोध तक सीमित नहीं है उसकी सता मानव के भाव जगत और विचारों में भी है।

कलागत सौन्दर्य :–

इस सौन्दर्य का संबंध मानव के आंतरिक मन से है। कलागत सौन्दर्य मानव को सच्चा सुख पहुंचाता है। उपयुक्त तीनों प्रकार के सौन्दर्य को देखने के बाद मानव जो चिंतन, तर्क, मनन करके उसे ग्रहण करता है तथा ग्रहण करने के बाद जो संवेदना या अनुभूति प्रकट होती है। इस अभिव्यक्ति को वह पाठकों, सहदयों तक पहुंचाता है तथा ग्रहण करने के बाद जो संवेदना या अनुभूति प्रकट होती है। इसके लिए वह आधारभूत सामग्री का संकलन बाह्य जगत से करता है। इस सामग्री लेकर जब कोई व्यक्ति एक विशेष प्रक्रिया द्वारा किसी चीज का निर्माण करता है तो वह कलागत सौन्दर्य की श्रेणी में आता है। कोई कलाकार या शिल्कपकार अपनी अनुभूतियों को अमूर्त से मूर्त रूप देता हे। तब कलागत सौन्दर्य उत्पन्न होता हैं।

इस प्रकार सौन्दर्य एक अनुभूति का विषय है। यह मानव में जन्मजात होता है। सौन्दर्य बोध को किसी एक परिभाषा में बांधना सरल कार्य नहीं क्योंकि देशकाल, स्थिति व मानव मूल्यों के अनुसार इसमें भी परिवर्तन और विकास होता रहता है। कवि कलाकार या रचनाकार अपने हदय में स्थित सौन्दर्य को प्रकट करके पाठक, दर्शक व श्रोता के मन में स्थित सौन्दर्य को जाग्रत कर देता है। इस प्रकार प्रकृति मानव जीवन तथा ललित कलाओं के आनंद दायक गुण का नाम सौन्दर्य है। दुखांत नाटक या दृश्य देखकर वास्तव में हमे दुख की अनुभूति होती है। सौन्दर्य सम्पूर्ण जगत् मे विद्यमान है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. आस्था और सौन्दर्य
2. पुनर्वनवा चेतना और शिल्प
3. डॉ0 कुमार विमल – छायावाद का सौन्दर्य शास्त्रीय अध्ययन
4. वावचस्पत्यम कोश– षष्ठो भाग
5. जयशंकर जोशी– हलायुध कोश, प्रथम संस्करण 1879 पृ0 7141
6. वाचस्पति गैरोला– भारतीय चित्रकला, प्रथम संस्करण 1963, पृ0 28
7. इन्टरनेट
8. सूरदास– सूरसागर नवम स्कंध, नंददुलारे वाजपेयी
9. संवेदना के स्तर